International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 18-08-2025, Accepted: 17-09-2025, Published: 03-10-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 101-104

वैश्विक पर्यावरणीय राजनीतिक प्रभाव

डॉ. रामानुज सिंह
प्रोफ़ेसर, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान, गर्वमेन्ट डिग्री कॉलेज, गन्डरबाल, जम्मू कश्मीर, भारत

सारांश
वैश्वीकरण एक अलग राष्ट्र के लोगों के बीच एकीकरण और बातचीत की एक प्रक्रिया है। वैश्वीकरण पर्यावरण को प्रभावित करता है जिसके कारण ग्लोबल वार्मिंग हुई। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपना कचरा समुद्र में छोडती है. मिट्टी हानिकारक रसायनों को अवशोषित करती है और पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करती है। अधिकांश विकासशील देश विकसित देशों को निवेश करने और वैश्विक बाधाओं को दूर करने तथा रोजगार पैदा करने के लिए आमंत्रित करते हैं लेकिन उन्हें नकारात्मक प्रभावों का सामना करना पड़ता है। पिछले कुछ वर्षो में उभरते देशों के तेजी से विकास ने ग्रीन हाउस गैसों के प्रमुख उत्सर्जकों को भी जन्म दिया है। जलवायु परिवर्तन मुख्य पर्यावरणीय समस्या है, इसकी कनेक्टिविटी ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन से है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मुद्दों में भूमिका निभाती हैंय बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बढ़ते चलन ने अंतरराष्ट्रीय कानून को सीएसआर–कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया है, सीएसआर का सबसे महत्वपूर्ण पहलू पर्यावरणीय मुद्दा है। कॉर्पोरेट पर्यावरणीय जिम्मेदारी (सीईआर) का उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों पर पर्यावरणीय प्रभाव और कार्बन पदचिह्न के बारे में जागरूकता पैदा करना है।

मुल शब्दः वैश्वीकरण, पर्यावरण, पारिस्थितिकी, जलवायु, हानिकारक ।

वैश्वीकरण का अर्थ है, जैसा कि अक्सर होता है, कि अमीर आर शक्तिशाली लोगों के पास अब शक्ति और कमजोरों की कीमत पर खुद को और अधिक समृद्ध और सशक्त बनाने के नए साधन हैं, हमारी जिम्मेदारी है कि हम सार्वभौमिक स्वतंत्रता के नाम पर विरोध करें। वैश्वीकरण से तात्पर्य है कि सम के साथ दुनिया आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से कैसे अधिक जुड़ गई है। वैश्वीकरण के माध्यम से व्यापार, विचारों, लोगों, प्रौद्योगिकी बीमारी, सेवाओं को दुनिया भर में साझा किया गया। जीवन स्तर बदल गयाय देश एक दूसरे पर निर्भर हो गये। विकासशील और अल्प–विकासशील देशों की वित्तीय स्थिति में वृद्धि हुई। विकसित देशों ने लोगों के जीवन में एक नया युग लाया। प्रथम विश्व युद्ध के बाद, द्वितीय विश्व युद्ध, महामंदी और नाजी शासन का अंत । संयुक्त राष्ट्र, नाटो, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक और अन्य वैश्विक संगठन। इन संगठनों का गठन दुनिया में शांति, स्थिरता और आर्थिक समृद्धि लाने में मदद के लिए किया गया था। वैश्वीकरण द्वारा आईएमएफ. डब्ल्यूबी ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में पूंजी के प्रवाह को बनाए रखने के लिए वस्तुओं और सेवाओं में सीमा पार लेनदेन में मदद की, जो देश की बढ़ती अर्थव्यवस्था, दुनिया भर के देशों की परस्पर निर्भरता में मदद करता है।

वैश्वीकरण को उलटा नहीं किया जा सकता है, हमें यह सीखने की जरूरत है कि हम इसके नकारात्मक प्रभाव को कैसे बदलते हैं और सभी पर्यावरणीय, राष्ट्रीय सुरक्षा और मानव जाति के मुद्दों को दूर करके अपनी दुनिया को रहन के लिए एक खुशहाल और समृद्ध जगह बनाने के लिए उन्हें कैसे लागू करते हैं। इस लेख के माध्यम से मै वैश्वीकरण के पर्यावरणीय मुद्दे पर प्रकाश डालना चाहूंगा। वैश्वीकरण – वैश्वीकरण का कार्य संज्ञा से ष्वैश्विकश जिसका अर्थ है पूरी दुनिया के बारे में या इसमें शामिल श्दुनिया भर मेंष्य सार्वभौमिक (ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी) । डब्ल्यूएचओ के अनुसार वैश्वीकरण को बढ़ी हुई परस्पर संबद्धता और के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। लोगों और देशों की परस्पर निर्भरता। आम तौर पर समझा जाता है कि इसमें दो परस्पर संबंधित तत्व शामिल हैं– वस्तुओं, सेवाओं, वित्त लोगों और विचारों के तेजी से बढ़ते प्रवाह के लिए अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं का खुलनाय और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्थानों और नीतियों में बदलाव जो ऐसे प्रवाह को सुविधाजनक बनाते हैं या बढ़ावा देते हैं। लोग तब तक वस्तुओं का व्यापार कर रहे हैं जब तक वे आसपास हैं। पहली शताब्दी में विलासितापूर्ण उत्पादों का व्यापार चीन से यूरोपीय महाद्वीप–रोम तक शुरू हुआ। उन्होंने रेशम मार्ग पर हजारों मील की यात्रा की। व्यापार अब क्षेत्रीय या स्थानीय नहीं बल्कि वैश्विक हो गया है। रेशम सबसे विलासितापूर्ण वस्तु थी, बाद में इसकी प्रजातियों को एशिया और यूरोप के बीच अंतरमहाद्वीपीय व्यापार में जोड़ा गया।

माल को उसके गतव्य तक पहुंचाने के लिए कई बिचौलिए शामिल थे। सिल्क रोड पर दो महान सम्राटों का प्रभुत्व था, ज्यादातर समय व्यापार रोम या चीन के स्थानीय दुश्मनों द्वारा बाधित होता था। सम्राटों के पतन के कारण अंततः सिल्क रोड बंद हो गया। इसके बंद होने के लिए उन्हें दोषी ठहराया गया। लेकिन बाद में मध्यकाल में (मंगोलों द्वारा) इस मार्ग को फिर से शुरू किया गया। यह राष्ट्र की आवश्यकता के अनुसार उठता–गिरता रहा।

7वीं–15वीं शताब्दी– इस्लाम सभी दिशाओं में फैलने वाला नया धर्म था, इस्लाम के संस्थापक पैगंबर मोहम्मद, प्रसिद्ध रूप से एक व्यापारी थे भूमध्यसागरीय और हिंद महासागर के व्यापार पर मुस्लिम व्यापारियों का प्रभुत्व था । मसालों का व्यापार होता था. इनमें रेशम के साथ–साथ लौंग, जायफल और जावित्री प्रमुख थे. ये भी एक विलासिता उत्पाद के रूप में बने रहे। 15–18वीं शताब्दी– इस अवधि के दौरान यूरोप ने दुनिया को आलू चॉकलेट, कॉफी और टमाटर से परिचित कराया। प्रजातियों की कीमतें गिर गईं। 18वीं शताब्दी के अंत तक, ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना और उनके नवाचार जैसे स्टीम इंजन, औद्योगिक बुनाई मशीनें आदि के माध्यम से ग्रेट ब्रिटेन ने दुनिया पर हावी होना शुरू कर दिया। पहली औद्योगिक क्रांति का युग शुरू हुआ।

1914 में प्रथम विश्व युद्ध के फैलने से सब कुछ नष्ट हो गया, युद्ध की जगह व्यापार ने ले ली, देशों ने अपनी सीमाएँ बंद कर दीं, सैकड़ों–हजारों नागरिक आकस्मिक क्षति के रूप में मारे गए।

मौद्रिक बाजार का टूटना, वैश्विक अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई, 1939–1945 में एक और विश्व युद्ध हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक, विश्व सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में व्यापार गिरकर 5 हो गया।

19वीं सदी में तीसरी औद्योगिक क्रांति के दौरान दुनिया ने वैश्विक बाजार में एक बड़ा बदलाव देखा। व्यापार और वाणिज्य से बाधाओं को दूर करने के लिए नई तकनीक की शुरुआत की गई, जिससे संचार आसान हो गया और उत्पाद की उपलब्धता, सेवाओं की मांग में वृद्धि, अविकसित और विकासशील देशों को रोजगार पैदा करने में मदद मिली, जिससे देश की वित्तीय वृद्धि में वृद्धि हुई। चूंकि वैश्वीकरण के अपने फायदे और नुकसान हैं जो देश की स्थिति के प्रकार पर निर्भर करते हैं।

अधिकांश मामलों में यह देखा गया है कि विकसित देश अपने लाभ के लिए विकासशील देशों और अविकसित देशों का उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए. इन देशों में बहुराष्ट्रीय कंपनियों को सस्ते श्रम और प्रचुर मात्रा में संसाधनों की उपलब्धता मिलती है, इसलिए वे उनका उपयोग अपनी कंपनी के लाभ को बढ़ाने के लिए करते हैं। विकसित देशों को प्रभावित करने के लिए क्योंकि उनके पास कुशल श्रमिक हैं और जो उन्हें उच्च कीमत पर उपलब्ध हैं, इसलिए वे कम कीमत वाले श्रम की खोज करते हैं और उन्हें क्षेत्र में कुशल बनाते है।

चूँकि वैश्वीकरण के माध्यम से हम एक–दूसरे पर निर्भर हो जाते हैं, इसलिए यदि एक देश की वित्तीय वृद्धि प्रभावित होती है तो दूसरे देश को भी इसका सामना करना पड़ता है। वैश्वीकरण का पर्यावरण पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं में व्यापक प्रभाव पड़ता है। लेकिन वैश्वीकरण ने उस बड़े पर्यावरणीय नुकसान को बढ़ाने में मदद की जिसका हम सामना कर रहे हैं। आज पर्यावरण पर वैश्वीकरण के प्रभाव को कम करने के लिए कुछ राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय नीतियां बनाई गई हैं। जलवायु परिवर्तन मुख्य पर्यावरणीय समस्या है. इसमें ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के माध्यम से कनेक्टिविटी है कुछ गैसों, विशेष रूप से CO2 के संचय के कारण वातावरण में सौर ऊर्जा का अत्यधिक प्रतिधारण 1 CO2 उत्सर्जन का मुख्य स्रोत औद्योगिक उत्पादन, परिवहन और वनों की कटाई है, लेकिन इन्हें 20वीं सदी में और विशेष रूप से हाल के दिनों में विकास का सात भी माना जाता है। समुद्री लिंक के माध्यम से परिवहन से तेल फैलने की संभावना भी बढ़ जाती है जो जल निकायों और समुद्री जानवरों को प्रभावित करती है. समुद्री प्रदूषण के कारण 1,000 बड़ी मछलियों और छोटी मछलियाँ मर जाती हैं। विकसित देश वैश्विक औद्योगीकरण के मुख्य खिलाड़ी हैं और सबसे बड़े प्रदूषक की जीएचजी उत्सर्जन उदाहरण में सबसे बड़ी हिस्सेदारी है– संयुक्त राज्य अमेरिका वैश्विक जीएचजी के लगभग 20 के लिए जिम्मेदार है। पिछले कुछ वर्षों में उभरते देशों के तीव्र विकास ने भी जीएचजी के प्रमुख उत्सर्जकों को जन्म दिया है। विकासशील देश वैश्वीकरण को हृदय से धन्यवाद देते हैं और अक्सर लाभ कमाने की कीमत पर पर्यावरण को दांव पर लगाते है इसका सबसे बड़ा उदाहरण चीन है जिसकी ऊर्जा की प्यास बुझाना अपराजेय है, वह हर हफ्ते एक नया कोयला आधारित बिजली संयंत्र खोलता है. हालांकि कायला सबसे सस्ता और सबसे प्रचुर जीवाश्म ईंधन है और सबसे अधिक प्रदूषण फैलाने वाला है चीन को विश्व में CO2 उत्सर्जन का सबसे बड़ा उत्सर्जक माना जाता है। लेकिन यह कठोर नवीकरणीय ऊर्जा कार्यक्रमों का प्रबंधन करता है। भारत, अमेरिका, ब्रिटेन जैसे देश और कुछ देश 2030 तक 100रू नवीकरणीय ऊर्जा तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं।

पेड़ों की कटाई और जलाने से CO2 की मात्रा कम हो जाती है जिसे पौधे ऑक्सीजन में परिवर्तित कर देते हैं। वस्तुओं के उत्पादन के लिए वर्षावनध्ऑक्सीजन गृह को कृषि भूमि में या कंक्रीट के जंगल में परिवर्तित करना और बाजार में मांग को किसी न किसी तरीके से पूरा करना, हर दिन पेरिस के लगभग दोगुने आकार को कृषि प्रयोजन के लिए कृषि भूमि में परिवर्तित किया जाता है। खासकर विकासशील देशों में. उदाहरण के लिए, ब्राजील में कुछ वर्ष पहले उसकी अधिकांश कृषि निर्यातोन्मुख थी। चीन को ब्राजीलियाई सोया निर्यात 15,000 से बढ़कर 6 मिलियन टन हो गया। सबसे गरीब क्षेत्र ग्लोबल वार्मिंग से सबसे अधिक प्रभावित है। 2060 तक सूखे के कारण उप–सहारा अफ्रीका में 90 मिलियन हेक्टेयर भूमि बंजर हो सकती है। अगले 70 वर्षों में लगभग 1.8 अरब लोगों को पानी की कमी हो सकती है। मध्य एशिया, उत्तरी चीन और एंडीज विशेष रूप से खतरे में हैं।

तूफान, तूफान, बाढ़ और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं की संख्या में वृद्धि, ग्लेशियरों के पिघलने से समुद्र के स्तर में वृद्धि का एक कारण ग्लोबल वार्मिंग भी है। तटीय क्षेत्र के हिस्से सर्वाधिक खतरे में हैं। तापमान वृद्धि के कारण निकट समय में जीवित प्रजातियाँ लुप्त हो सकती हैं जैसे पेंगुइन, हिम तेंदुआ, डॉल्फिन, व्हेल, ध्रुवीय भालू को लुप्तप्राय प्रजाति घोषित किया गया है। यह जानकर बुरा लगता है कि इस खूबसूरत द्य प्राणी को सिर्फ मानवीय गतिविधियों के कारण अपनी जान देकर चुकाना पड़ेगा और यह दुनिया के पारिस्थितिकी तंत्र पर एक अमिट छाप छोड़ेगा । अत्यधिक मछली पकड़ने ने महासागरों में कुछ मछली प्रजातियों पर जोर दिया है। न केवल उपभोग के लिए बल्कि औषधीय उपयोग के लिए भी वैश्विक मांग में वृद्धि के द्य कारण अत्यधिक मछली पकड़ने का काम किया जाता है । भूमध्यसागरीय ब्लूफिन टूना का भी यही हश्र हुआ है, द्य जापान में अत्यधिक मछली पकड़ने से इसकी नाजुकता के विलुप्त होने का खतरा है। डेनमार्क में फरो द्वीप पर, डॉल्फिन के शिकार में 1400 डॉल्फिन मारे गए हैं और इस द्वीप पर व्हेल की संख्या बढ़ गई है, पहले वे अपने उपभोग के लिए डॉल्फिन का शिकार करते थे लेकिन अब अवैध विपणन ने शिकार को बढ़ा दिया है।

इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) के अनुसार, दुनिया के 22रू स्तनधारियों के विलुप्त होने का खतरा है, साथ ही दुनिया की 24रू साँप प्रजातियाँ, दुनिया की 31रू उभयचर प्रजातियाँ, और दुनिया की 35रू पक्षी प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। वनस्पतियों को भी बहुत खतरा है विदेशी कच्चे माल और कृषि उत्पादों की बढ़ती मांग विकसित देशों में उपभोक्ताओं के लिए उचित मूल्य पर उपलब्ध है। बढ़ती मांग से धीरे–धीरे पौधों की उपलब्धता कम हो जाती है। फर्नीचर के लिए सागौन की लकड़ी और अन्य उच्च गुणवत्ता वाली लकड़ी की मांग संकटग्रस्त प्रजातियों की श्रेणी की सूची में है। कागज की बढ़ती आवश्यकता वनों की कटाई और शहरीकरण का कारण बन रही है, जिसके कारण पृथ्वी की सतह से वनस्पतियों और जीवों का सफाया हो गया है। लैटिन अमेरिका और उप–सहारा अफ्रीका में भी जंगल उजाड़े जा रहे हैं। चूंकि पारिस्थितिकी तंत्र को कुल क्षति होने से विश्व अर्थव्यवस्था को 68 बिलियन अमेरिकी डॉलर का वार्षिक नुकसान होगा। प्रकृति के लिए विश्व वन्यजीव कोष (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) का अनुमान है कि यदि कुछ नहीं बदला तो 2030 तक मानवता ग्रह द्वारा हर साल उत्पादित संसाधनों का दोगुना खर्च कर देगी।

वैश्वीकरण का हमारी जीवनशैली पर बहुत प्रभाव पड़ा है। इसने हमारे जीवन को प्रौद्योगिकी तक आसान पहुंच, बेहतर नवाचार और संचार बना दिया है, इसने विभिन्न संस्कृतियों के लोगों को भी एक साथ ला दिया है। सीमा पार करने के अलावा, जिसके माध्यम से देशों का विकास हुआ, इसने राज्य के लिए एक मजबूत आर्थिक चौनल का नेतृत्व किया। इससे पर्यावरण के प्रति भी काफी चिंता पैदा हुई क्योंकि हर अच्छी चीज कुछ न कुछ नकारात्मक प्रभाव लेकर आती है।

इसके अलावा वैश्वीकरण के कारण दुनिया एक साथ आई जिससे उत्पाद की मांग में वृद्धि हुई क्योंकि उन मांगों को पूरा करने के लिए उत्पादन को कम अवधि में पूरा करने की आवश्यकता है। सबसे अधिक प्रभावित तत्व प्राकृतिक संसाधन था क्योंकि प्राकृतिक संसाधन बनने समय लगता है। लेकिन थोडे समय में ही इसकी खपत हो जाती है, इसलिए इसकी कमी या हम कह सकते हैं कि कुछ प्रजातियों को लुप्तप्राय प्रजातियों में सूचीबद्ध किया गया है, जिन्हें दुर्लभ माना जाता है और भारी मांग के कारण इसकी खपत ने पारिस्थितिक चक्र को गंभीर रूप से प्रभावित किया है।

पहले लोग उन उत्पादों का उपभोग करते थे जो उन्हें स्थानीय स्तर पर उपलब्ध थे लेकिन वैश्वीकरण ने लोगों को करीब ला दिया है और वे अपनी संस्कृति, भोजन, परंपराआ को साझा करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय सीमा से उत्पाद की मांग बढ़ी जिससे परिवहन में वृद्धि हुई। वैश्विक परिवहन के लिए उपयोग की जाने वाली ईंधन की मात्रा प्रदूषण का कारण बनती है और ध्वनि और वायु प्रदूषण का कारण बनती है, साथ ही सबसे छोटे मार्ग के साथ विशाल कार्गो के लिए रास्ता बनाने से कुछ महाद्वीपों के परिदृश्य पर असर पड़ा है। ऐसे मार्ग पर यातायात से बचने के लिए कई अन्य मार्गों का निर्माण किया जाता है। परिवहन ने ऊर्जा के गैर–नवीकरणीय स्रोतों यानी गैसोलीन की आवश्यकता पर भी जोर दिया। विमान से निकलने वाली गैसों के कारण ग्रीनहाउस प्रभाव बढ़ने के अलावा ओजोन परत का ह्रास भी हुआ।

सारा औद्योगिक कचरा या तो समुद्र में या मिट्टी में फेंक दिया जाता है। हानिकारक रसायन छोड़ने से भूमि बंजर हो जाती है, फसल या पौधे उगाने के लिए बंजर हो जाती है। पानी के अंदर के जीव मर जाते हैं इसका प्रमुख उदाहरण तेल है जो लीक हो रहे कंटेनरों या पाइपलाइनों से फैलता है जो हानिकारक होता है और जिसे साफ करना बहुत मुश्किल होता है।

मेक्सिको की खाड़ी पाइपों, कुओं और अन्य ऊर्जा बुनियादी ढांचे की उलझन से ढकी हुई है, उनमें से कई का अब उपयोग नहीं किया जाता है, इन अप्रयुक्त पाइपलाइनों से तेल निष्कर्षण के उत्पादन के परिणामस्वरूप, तेल फैल गया जिसका उपयोग तालोस द्वारा किया गया था, जिसका पूर्व धारक क्षेत्र में अपतटीय पट्टे पर था। तटरक्षक बल को रिसाव को साफ करने के लिए कहा जाता है, लेकिन जब जांच की गई और तालोस से पूछताछ की गई तो उन्होंने कहा कि बिखरी पाइपलाइन पर उनका कोई बकाया नहीं है।

जुलाई 2020 में, तेल टैंकर एमवी वाकाशियो ने 4,000 मीट्रिक टन तेल ले जाने की सूचना दी, जो मॉरीशस के दक्षिणी तट के द्वीप पर मूंगा चट्टान पर फंस गया, टूटे हुए जहाज से 1000 मीट्रिक टन ईंधन हिंद महासागर में लीक हो गया, जिससे प्रदूषण फैल गया। आसपास के समुद्र तट और लैगून। एक अन्य मामले में, रूस के आर्कटिक उत्तर में बड़े पैमाने पर डीजल तेल रिसाव ने एक बड़ी मीठे पानी की झील को प्रदूषित कर दिया और 12 मील तक आर्कटिक महासागर को खतरे में डाल दिया। इस आधुनिक समय में इस प्रकार की आपदाएँ बहुत बड़ा जोखिम हैं ।

प्लास्टिक प्रमुख विषैला प्रदूषक है क्योंकि यह एक गैर–बायोडिग्रेडेबल उत्पाद है, इसका उपयोग निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की पैकेजिंग और संरक्षण के लिए अत्यधिक किया जाता है, इससे प्लास्टिक के उपयोग में वृद्धि होती है और पर्यावरण प्रदूषण होता है।

वैश्वीकरण पूरी तरह प्रतिस्पर्धा और निरंतरता पर आधारित है। निजी कंपनियों को पर्यावरण–अनुकूल तकनीकों का उपयोग शुरू करना चाहिए जो आर्थिक रूप से व्यवहार्य हो । बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मुद्दों में भूमिका निभाती हैंय बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बढ़ते चलन ने अंतरराष्ट्रीय कानून को सीएसआर–कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया है, सीएसआर का सबसे महत्वपूर्ण पहलू पर्यावरणीय मुद्दा है। पर्यावरणीय क्षति के मामले में, उन्हें इसके लिए जिम्मेदार होना चाहिए और ऐसे नुकसान की भरपाई करनी चाहिए ।

औद्योगीकरण को वैश्वीकरण के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। हमें लंबे समय तक इन उद्योगों के हमारे पर्यावरण और हमारे स्वास्थ्य पर पड़ने वाले परिणामों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। तेल रिसाव, गैस रिसाव जैसी आपदाएँ हमारे पर्यावरण और लोगों के जीवन पर वर्षों तक अपनी छाप छोड़ती हैं। इस नुकसान से उबरने के लिए बहुत अधिक समर्थन की आवश्यकता है और प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण में अपनी भूमिका निभानी होगी। ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, वनों की कटाई, हर साल जंगलों का जलना हमें दुनिया के विनाश के करीब लाता है। वैश्वीकरण कई मायनों में अच्छा है लेकिन किसी विकासशील देश में प्लांट स्थापित करने से पहले उन्हें पर्यावरण का ध्यान रखना चाहिए और ऐसी नीतियां बनानी चाहिए जिससे पर्यावरण को मदद मिले, वे प्रकृति से कितना लेते हैं उसे थोड़े प्रतिशत में वापस कर दें, कम से कम अच्छा करने का प्रयास कर सकते हैं।

उद्योगों को स्थानीय सरकार के संपर्क में रहना चाहिए और उन्हें अपनी स्थापना और उनके द्वारा अपनाई जाने वाली नीतियों के बारे में समझाना चाहिए, देश की सरकार को भी समय पर निगरानी रखनी चाहिए और मुनाफा कमाने के बावजूद पर्यावरण के बारे में सोचना चाहिए। खतरनाक रासायनिक उद्योग स्थापित करने से पहले देश के पर्यावरण न्यायाधिकरणों या प्राधिकरण से मंजूरी लेनी चाहिए. मंजूरी प्रमाण पत्र के साथ उन्हें भूमि प्रदान की जानी चाहिए और यह आवासीय क्षेत्र से दूर होनी चाहिए।

ग्लोबल वार्मिंग हर देश के लिए सबसे बड़ी चिंता का विषय है। देशों को ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोत की ओर बढ़ना चाहिए। उद्योगों, स्कूलों, आवासीय क्षेत्रों में सोलर प्लांट लगाने और बढ़ावा देने से मदद मिलेगी और बिजली की खपत भी कम होगी। उत्पादों को पुनर्चक्रित किया जाना चाहिए, कारखानों को नवीनतम तकनीक और नवाचार में निवेश करना शुरू करना चाहिए जिसके माध्यम से वे विनिर्माण अपशिष्ट को कम कर सकते हैं, कम ऊर्जा और पानी का उपयोग कर सकते हैं। देशों का लक्ष्य कार्बन तटस्थ, नेट–शून्य या कार्बन नकारात्मक बनना होना चाहिए।

इलेक्ट्रिक वाहनों पर स्विच करना नवीनतम प्रवृत्ति है, यूके सरकार ने अगले 5 वर्षों में इलेक्ट्रिक कारें खरीदने और 2030 तक पेट्रोल और डीजल कारों पर प्रतिबंध लगाने का इरादा किया है। नई आवास योजनाओं में एक इलेक्ट्रिक वाहन प्लग–इन हाइब्रिड शामिल है। समुद्र में फैलने से बचने के लिए क्षमता को कम करने के लिए कार्गो को ईंधन से अधिक नहीं भरना चाहिए, जोखिम को कम करने के लिए फिटिंग का नियमित निरीक्षण करना चाहिए। समुद्र में पाइपलाइनों की भी नियमित जांच की जानी चाहिए, रिसाव से बचने के लिए पुराने और लीक हो रहे पाइपों को बदला जाना चाहिए। खतरनाक रासायनिक उद्योगों को नियमित रूप से रासायनिक भंडारण टैंकों पर नजर रखनी चाहिए, तापमान बनाए रखना चाहिए और प्रशीतन प्रक्रिया को उचित देखभाल के साथ करना चाहिए। जिस टैंक में रसायन होते हैं और पाइपों की नियमित रूप से जांच की जानी चाहिए, उन्हें नियमित अंतराल पर बदलना चाहिए ताकि उन अनावश्यक परिस्थितियों से बचा जा सके जो श्रमिकों, लोगों और पर्यावरण क जीवन को नुकसान पहुंचाती हैं। प्रबंधन को लाभ कमाने के अलावा जीवन और द्य स्वस्थ पर्यावरण को भी महत्व देना चाहिए। देश में प्लांट स्थापित करने के लिए देश के साथ लीज को तभी मंजूरी दी जानी चाहिए जब उद्योग पर्यावरण संरक्षण की

आवश्यकता पूरी कर ले। प्राधिकरण को उद्योग के कामकाज, रखरखाव और कचरे के निपटान पर सख्ती से निगरानी रखनी चाहिए।

निष्कर्ष

पर्यावरणीय मुद्दों पर कानून बनाते समय और न्यायाधिकरणों की स्थापना करते समय बिना किसी खामी के सख्त कानून बनाए जाने चाहिए, क्योंकि खामियां विकसित देशों को ऐसे कमजोर कानूनों का फायदा उठाने और हर चीज का फायदा उठाने की अनुमति देती हैं। विकसित देश अपने रासायनिक कचरे को विकासशील देशों में डंप करने के लिए विकासशील देशों का उपयोग करते हैं और वे इस डंपिंग से अनजान होते हैं जिससे उनकी भूमि बंजर हो जाती ह, धीरे–धीरे पौधे बंजर हो जाते हैं, जल निकाय प्रदूषित होने लगते हैं और जल के सेवन से जीव–जंतु संक्रमित हो जाते हैं। समुद्र में रासायनिक कचरा फेंकने से हजारों जलीय आवास नष्ट हो जाते हैं। पक्षी उन मछलियों को खाते हैंय घास और वे इस संक्रामक रासायनिक रोग से पीड़ित हैं। रासायनिक गैसों के साँस लेने से फेफड़े प्रभावित होते हैं, धुएं के संपर्क में आने से आम तौर पर आंखों में जलन, नेत्रश्लेष्मलाशोथ, त्वचा में जलन की शिकायत होती है। लोग श्वसन समस्याओं, न्यूरोलॉजिकल, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल लक्षणों के कारण मरते हैं। इन रासायनिक उद्योगों में काम करने वाले श्रमिकों को मास्क, आई शील्ड, दस्ताने, जूते और अन्य सुरक्षा आवश्यकताएं प्रदान की जानी चाहिए जो रासायनिक उद्योगों के लिए डिजाइन की गई हैं।

संदर्भ :

1. वैश्वीकरण क्या है? वैश्वीकरण की सभी परिभाषाएँ ।
2. वैश्वीकरण का एक संक्षिप्त इतिहास. पीटर वानहम द्वारा । 17 जनवरी 2019 को प्रकाशित https://www–weforum–org/agenda/2019/01/how &globalization&4&0 & fits & into & the &history & of & globalization 2021)
3. लेखकः ओईसीडी. वैश्वीकरण का पर्यावरण पर क्या प्रभाव है? संशोधित: 11 अप्रैल 2013। https://doi–org/10–1787/9789264111905–8
4. वैश्वीकरण और पर्यावरण पर इसका प्रभाव । एनवायरो संपादक द्वारा । https://www–environment–co–za/environmental&issues/globalization&and&its &impact&on&the & environment&html
5. इडा के बाद मैक्सिको की खाड़ी में बड़ा तेल रिसाव, सफाई कार्य जारी । पर प्रकाशित 5 सितंबर, 2021
6. मॉरीशस ऑयल स्पिल 2020 प्रकाशितरू 25 जुलाई, 2020
7. पर्यावरण प्रदूषण के लिए बहुराष्ट्रीय निगमों का दायित्व । प्रकाशित: 15 नवंबर 2020 एडवोकेट्सपीडिया, एएसएसएन से 149021